International Double Blind Peer Reviewed, Refereed , Indexed , Multilingual-Multidisciplinary-High Impact Factor-Monthly-Research Journal Related to Higher Education For all Subject

ISSN 0974-2832 (Print), E-ISSN- 2320-5474,RNI RAJBIL 2009/29954

SHODH, SAMIKSHA AUR MULYANKAN

January , 2024

Vol-1, ISSUE-I

IMPACT FACTOR- 6.115 (SJIF)

Editor in Chief

Dr. Krishan Bir Singh

www.ugcjournal.com

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Editor's Office
A- 215, Moti Nagar,
Street No.7
Queens Road
Jaipur- 302021, Rajasthan,
India

94 139 70 222

E-Mail:
www.ugcjournal@gmail.com

professor.kbsingh@gmail.com

मुख्य सम्पादक – डॉ. कृष्णबीर सिंह का मानद पद कार्य पूर्णतः अवैतनिक है।

इस शोध पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये।

शोध पत्र की समस्त जिम्मेदारी शोधपत्र लेखक की होगी।उक्त जर्नल में प्रकाशन हेतु भेजे गए पेपर सामग्री का सम्पूर्ण नैतिक दायित्व पेपर लेखक का होगा। मुख्य संपादक ,प्रकाशक ,मुद्रक , पिअर रिविव्यु मंडल जिम्मेदार नहीं होगा। लेखकों से अनुरोध है किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी न करें।

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर ही होगा।

1. Editing of the research journal is processed without any remittance. **The selection and publication is done after recommendation of Peer Reviewed Team, Refereed and subject expert Team.**
2. Thoughts, language vision and example in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper. **The responsibility of the matter of research paper is entirely of author.**
3. Along with research paper it is compulsory to sent Membership form and copyright form. Both form can be downloaded from website i.e. **www.ugcjournal.com**
4. In any Condition if any National/International university denies to accept the research paper published in the journal then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Manangement.
5. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor unless it will be assumed as disobedience of copyright rules.
   In case of plagiarism, the entire moral responsibility of the paper material will rest with the author only.
6. **The entire moral responsibility of the paper material sent for publication in the said journal will be that of the paper author. Chief Editor, Publisher, Printer, Peer Review and Refereed Board will not be responsible.**

Authors are requested not to do any kind of plagiarism

7. All the legal undertaking related to this research journal are subjected to be hearable at jaipur jurisdiction only.

EDITORIAL BOARD

Patron

Prof. Kala Nath Shastri

(Rashtrapati Puraskar" For His Contribution To Sanskrit)

Prof. Dr. Alireza Heidari

Full Professor And Academic Tenure, USA

Chief Editor

Dr. Krishan Bir Singh

International Advisory Board

Aaeid M. S. Ayoub

Geotechnical Environmental Engineering

Uqbah bin Muhammad Iqbal

Postgraduate Researcher

Badreldin Mohamed Ahmed Abdulrahman

Associate Professor

Dr. Alexander N. LUKIN

Principal Research Scientist & Executive Director

Dr. U. C. Shukla

Chief Librarian and Assistant Professor

Dr. Abd El-Aleem Saad Soliman Desoky

Professor Assistant

Prof. Ubaldo Comite

Lecturer

Moustafa Mohamed Sabry Bakry

Dr Sajid Mahmood

Shameemul Haque

Associate Chief Editor

Ravindrajeet Kaur Arora

S. Bal Murgan

Dr. Sandeep Nadkarni

Dr. A Karnan

Dr. S.R. Boselin Prabhu

Deepika Vodnala

Dr. Kshitij Shinghal

Christo Ananth

Gopinath Palai

Dr. Neeta Gupta

Dr. Vinita Shukla

Harold Jan R. Terano

Dr Sajid Mahmood

Dr Pavan Mishra

Editor

Dr.H.B.Rathod

Dr. Dharamender Singh Chauhan,UOR,Jaipur

Dr.Govind Nath Chaudhary-Sanskrit- Bhagalpur

Dr.Naveen Gautam

Dr. Mohini Mehrotra

Dr. Arvind Vikram Singh

Dr. Suresh Singh Rathore

Dr.Kishori Bhagat

Dr.Murari Lal Dayma

Kamalnayan. B. Parmar

Dr.Deepak Sharma

Dr.Sanjay B Gore

Dr. A.karnan

Dr.Amita Verma

Dr . Ity Patni

Dr. Somya Choubey

Dr.Surinder Singh

Dr. Manoj S. Shekhawat,

Dr. Anshul Sharma

Dr. Ramesh Kumar Tandan

S N Joshi

Dr. Sant Ram Vaish

Bindu Chauhan

Dr. Vinod Sen

Dr. Sushila Kumari

Dr Indrani Singh Rai

Dr Abhishek Tiwari

Prof.S.K.Meena

Prof.Praveen Goswami

G Raghavendra Prasad

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

Dr. Dnyaneshwar Jadhav
Akshey Bhargava
Dr. A. Dinesh Kumar
Dr. Pintu Kumar Maji
Dr Hanan Elzeblawy Hassan
Sandeep Kumar Kar
Dr.R.devi Priya
Dr.P.Thirunavukarasu
Dr. Srijit Biswas
Parul Agarwal
Dr. Preeti Patel
Archana More
Dr. Harish N
Dr. Seema Singh
Dr. Ram Singh Bhati
Dr. Pankaj Gupta
Dr Arvind Sharma
Dr. Ramesh Chandra Pathak
Dr. Ankush Gautam
Dr Markandey Dixit
Dr. Manoj Kumar
Ratko Pavlovi, Phd
Dr.S.Mohan
Dr Ramachandra C G
Dr.Sivakumar Somasundaram
Dr. Sanjeev Kumar
Dr. Padma S Rao
Dr Munish Singh Rana
Dr. Piyush Mani Maurya

Associate Editor

Dr. Yudhvir Redhu
Dr.Kiran B.R
Dr Richard Remedios
Dr. R Arul
Anand Nayyar
Dr . Ekhlaque Ahmad
Dr. Snehangsu Sinha
Dr Niraj Kumar Singh
Sandeep Kataria
Dr Abhishek Shukla
Somesh Kumar Dewangan
Amarendra Kumar Srivastav
Dr K Jayalakshmi
Dilip Kumar Jha

Assistant Editor

Jasvir Singh
Dr.pintu Kumar Maji
Dr. Soumya Mukherjee
Prof Ajay Gadicha
Ashutosh Tiwari
Gyanendra Pratap Singh
Jitendra Singh Goyal
Ashish Jaiswal
Hiten Barman
Dr. Priti Bala Sharma

Subject Expert

Dr. Jitendra Arolia
Dr. Suresh Singh Rathore
Dr.kishori Bhagat
Dr Mrs Vini Sharma
Ranjan Sarkar
Chiranji Lal Parihar
Dr. Lalit Kumar Sharma
Dr Amit Kumar
Santosh Kumar Jha
Dr . Ekhlaque Ahmad
Naveen Kumar Kakumanu
Dr. Chitra Tanwar
Jyotir Moy Chatterjee
Somesh Kumar Dewangan
Raffi Mohammed
Dr. Sunita Arya
Dr. Ram Singh Bhati
Dr. Janak Singh Meena
Dr. Neha Kalyani

Dr. Rajeev Nayan Singh
Dr. Pankaj Rathore
Dr. Mahendra Parihar
Pradip Kumar Mukhopadhyay
Dr Vijay Gaikwad

Research Paper Reviewer

Dr. B H Kirdak
Amit Tiwari
Dr Dheeraj Negi
Dr. Meeta Shukla
Dr. Ranjana Rawat
Sonia Rathi
Dr.Anand Kumar
Dr.Pardeep Sharma
Anil Kumar
Dr. Deepa Dattatray Kuchekar
Dr Ade Santosh Ramchandra

Guest Editor

Dr. Lalit Kumar Sharma
Dr. Falguni S. Vansia

Chief Advisory Board

Ashok Kumar Nagarajan

Advisory Board

Dr. Naveen Kumar
Manoj Singh Shekhawat
Pranit Maruti Patil
Vishnu Narayan Mishra

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

International Level Double Blind Peer Reviewed,Refereed,Indexed Research Journal,ISSN(Print)-0974-2832,E-ISSN-2320-5474,RNI-RAJBIL-2009/29954,Impact Factor-6.115(SJIF),January-2024,VOL-I,ISSUE-1

Research Paper - Education

पर्यावरण संरक्षण के लिए शाश्वत विकास की संकल्पना आवश्यक

* डॉ. विष्णु कुमार * * डॉ. जय प्रकाश सिंह

** सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं*
** * सहायक प्रोफेसर, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं*

सारांश

प्राचीन काल में अपने महर्षियों ने पर्यावरण की महत्ता को ध्यान में रखकर इसे अपनी सांस्कृतिक मूल्यों के रूप में अपनाकर पल्लवित एवं पोषित किया था परन्तु विकास के अंधाधुंध दौड़ में अपनी ही सांस्कृतिक मूल्यों को हम लोग भूलते जा रहे हैं। मनुष्य के लालच एवं आधुनिकता एवं औद्योगिकीकरण की गलत नीतियों के कारण पर्यावरण में असंतुलन हुआ है। ठीक ही कहा गया है ''अति सर्वत्र वर्जयते।'' मानव अपनी सुख–सुविधा एवं भोग–विलास के साधन जुटाने के लिए पर्यावरणीय संसाधनों का अत्यधिक दोहन करता जा रहा है जिससे प्रदूषण का जन्म हुआ। आधुनिकता एवं विकास के नाम के साथ–साथ प्रदूषित खाद्य, प्रदूषित जल, प्रदूषित हवा सेवन करना पड़ रहा है। वर्तमान में दिल्ली शहर में हवा में प्रदूषण की मात्रा अत्यधिक होने के कारण सास लेने में परेशानी एवं आंखों में जलन की शिकायत आम बात हो गई है। अर्थात् पर्यावरण प्रदूषण दिनों–दिन अत्यधिक खतरनाक होता जा रहा है। इसके संरक्षण के लिए शाश्वत विकास की संकल्पना आवश्यक है ताकि आवश्यकता और विकास के साथ–साथ संतुलन बनाते हुए समुचित उपयोग पर बल देकर संरक्षण किया जा सकता है।

की–वर्ड– पर्यावरण संरक्षण, शाश्वत विकास की संकल्पना, सतत विकास।

प्रस्तावना–

प्रकृति का निर्माण मूलतः पंच तत्वों से मिलकर हुआ है। ये तत्व है जल, वायु, आकाश, अग्नि, एवं प्रकृति। यह समस्त तत्व ही हमारे पर्यावरण के प्रमुख घटक और जीवन के आधार भूत स्तम्भ है। पर्यावरण भौतिक तत्वों शक्तियों और परिस्थितियों का एक ऐसा समुच्चय है जिसका प्रभाव जैव–जगत के विकास चक्र पर पड़ता है। पर्यावरण की प्रमुख विशेषता इसकी साधन सम्पन्नता है और ये प्राकृतिक संसाधन ही मानव के भौतिक विकास के आधार है। प्राथमिक संसाधनों की उपलब्धता एवं जैव विविधता के अनुसार ही प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। जो सामाजिक कल्याण का आधार है। पर्यावरण प्रकृति की सहज गति है और तकनीकी विकास के इस युग में मनुष्य प्रकृति का विजेता बनकर सभ्यता के शिखर पर खड़ा होने का दावा करता है, परन्तु मानव की उच्च महत्वाकांक्षाओं उसकी निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या पारिवारिक जरूरतों औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन ने प्रकृति एवं उसके घटकों के मध्य स्थापित सामंजस्य में हस्तक्षेप किया और प्रदूषण को जन्म दिया है। वर्तमान में मनुष्य की वैभवयुक्त एवं विलासतापूर्ण जीवनशैली ने इन परिस्थितियों को और भी

गम्भीर बना दिया है जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावरणीय प्रदूषण की विभीषिका और अधिक खतरनाक होती जा रही है।

पर्यावरण मानव जीवन पद्धति के लिए यदि अनिवार्य अंग है तो इसका संरक्षण और बचाव भी मानव का परम कर्त्तव्य बन जाता है। पर्यावरण संरक्षण मानवीय जीवन के लिए अति आवश्यक विषयवस्तु बन गया है। इस दिशा में वैश्विक एवं भारत दोनों ही स्तरों पर अनेक प्रयास एवं आन्दोलन अनवरत जारी है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा वर्ल्ड वॉच ग्रीन पीस, वर्ल्ड लाइफ फोरम जैसी संस्थाएं की भूमिका महत्वपूर्ण है। पर्यावरण को बचाने के लिए स्त्रियों ने अग्रणी होकर योगदान दिया है। महिलायें वैदिक काल से ही पर्यावरण संरक्षण के पक्ष में रही है। उदाहरणस्वरूप तुलसी पूजा, पीपल पूजा एवं वट वृक्ष पूजा आदि हैं। भारतीय महिलायें सदैव इस दिशा में कार्यशील रही है। हमारी भारतीय संस्कृति को देखने पर रीति–रिवाजों, परम्पराओं में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता दिखाई देती रही है। भारतीय महिलायें सदैव से ही पर्यावरण संरक्षण में पुरुषों से आगे रही हैं इसका पता हमें विभिन्न पर्यावरण संरक्षण के आन्दोलनों का अध्ययन करने पर चलता है। जैसे– **खेजड़ली आन्दोलन**– राजस्थान में 'अमृतादेवी', **चिपको आन्दोलन**– उत्तरप्रदेश में 'गौरादेवी', **नवधान्या आन्दोलन**– वन्दना शिवा, **नर्मदा बचाओ आन्दोलन**–मेधा पाटकर।

शाश्वत विकास (सतत विकास) की संकल्पना

आज का मानव वैज्ञानिक युग में तीव्र आर्थिक विकास के स्थान पर एक ऐसी विकास प्रणाली विकसित करने पर विवश हुआ, जिससे मानव की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति तो होगी, साथ ही भावी पीढ़ियों के हितों (श्रेष्ठ जीवनस्तर) की भी सुरक्षा हो सके। यहीं पर शाश्वत विकास की संकल्पना/अवधारणा सार्थक रूप से काम कर सकती है। जैसे– यदि हमें पेड़ काटने की जरूरत है तो उसकी जगह आप नये पेड़ भी लगाने की भी आवश्यकता है ताकि भविष्य में पेड़ उपलब्ध हो सके। जिससे सतत विकास के साथ–साथ पर्यावरण का भी संरक्षण/संतुलन बनता जाय तभी मानव सही विकास की ओर अग्रसर हो सकेगा। सारांश में हम कह सकते हैं कि शाश्वत विकास (सतत विकास) की अवधारणा संसाधनों के समुचित विदोहन द्वारा जनसंख्या के वर्तमान प्राथमिक आवश्यकताओं को संतृप्त करने पर बल देती है न कि विलासितापूर्ण जीवन की आवश्यकताओं पर।

पर्यावरण संरक्षण हेतु शाश्वत विकास (सतत विकास) की संकल्पना–

इसके लिए निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी–

1. जनसंख्या नियंत्रण– किसी भी देश के लिए बहुत ज्यादा जनसंख्या वृद्धि होना एक समस्या बनी रहती है तो सतत विकास के लिए जरूरी है कि एक संतुलित/उपयुक्त जनसंख्या नीति हो जिससे जनसंख्या को ऐसे स्तर पर लाया जा सके जिसका भरण–पोषण प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण पर बिना विपरीत प्रभाव डाले किया जा सके।

2. कृषि– आजादी के बाद हरित क्रांति एवं पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कृषि में आत्मनिर्भर होने की दिशा में अग्रसर हुए हैं। इसके अंतर्गत नई तकनीकी के साथ–साथ शाश्वत खेती की ऐसी प्रणाली अपनानी होगी जो जल, वायु और भूमि को क्षति पहुंचाये बिना खेती की उत्पादकता भी बनाये रखा जा सके। इसके लिए बहुफसलीय खेती, फसल चक्र, दलहनी फसलों को प्राथमिकता, गोबर खाद का उपयोग एवं वर्टिकल खेती को बढ़ावा देना होगा।

3. उद्योग– पिछले तीस वर्षों में औद्योगिक व्यवस्था में काफी सुधार हुआ है फिर भी इसके लिए सतत/शाश्वत विकास में प्रदूषण रहित औद्योगिक प्रणाली की स्थापना सम्बन्धी नीति पर विचार किये जाते हैं। यह कैसे होगा? किस सीमा तक होगा, उन बिन्दुओं पर विचार किया जाता है ताकि औद्योगिकीकरण से निकलने वाले कचरे का निपटारा पहले से सुनिश्चित होता है जिससे पर्यावरण कम से कम प्रदूषित हो।

4. ऊर्जा– वर्तमान में जीवनशैली काफी विलासितापूर्ण हो चुकी है। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक हम किसी न किसी रूप से ऊर्जा का उपयोग कर रहे होते हैं। इसके उत्पादन में साधारणतः लकड़ी, कोयला, पन–बिजली एवं पशु अपशिष्ट का उपयोग किया जाता है। इन साधनों की भी एक सीमा है। सतत विकास (शाश्वत विकास) के अंतर्गत ऐसी ऊर्जा नीति एवं ऊर्जा उपयोग पर विचार किया जाता है जिससे पुनः उपयोगी ऊर्जा संसाधनों के वैकल्पिक स्रोत जैसे– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस संयंत्र आदि के प्रयोग पर बल दिया जाता है ताकि पर्यावरण का कम से कम नुकसान हो सके। सरकार की तरफ से वैकल्पिक स्रोतों के लिए सब्सिडी भी देनी चाहिए।

5. परिवहन प्रणाली– वर्तमान समय में प्रचलित परिवहन चाहे दो पहिया हो या चार पहिया वाला वाहन या हो वायुयान या जलपोत। सभी से निकलने वाले धूंआ या अवशिष्ट पदार्थ/गैस से पर्यावरण की काफी क्षति हो रही है। इसमें जो जितना विकसित देश है, उतना ज्यादा क्षति वर्षों से पहुंचा रहा है। सतत विकास (शाश्वत विकास) के अंतर्गत हमें ऐसी परिवहन नीति पर विचार करना होगा कि व्यापक रूप से हो रहे प्रदूषण को किस प्रकार प्रदूषण रहित परिवहन प्रणाली का विकास किया जा सके। इसके लिए पेट्रोल, डीजल की जगह एल.पी.जी., सी.एन.जी. गैस आदि के उपयोग पर बल दिया जा सकता है। जहां तक हो प्रदूषण रहित वाहन जैसे– ई–वाहन को बढ़ावा दिया जाये। इसके लिए सरकार की तरफ से भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

6. प्राकृतिक संसाधनों का प्रबन्धन– प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार किया जाये कि वर्तमान में विकास न रूके और भविष्य के लिए आर्थिक विकास की संभावना भी बंद न हो। ऐसी संतुलित रणनीति के उपयोग पर बल देना होगा। इसके लिए जरूरी है कि नित नये अनुसंधान पर बल दिया जाये जिसमें अपने पर्यावरण की कम से कम क्षति हो।

7. उत्सर्जित कचरे का प्रबन्धन– सभी देशों के पास प्राकृतिक संसाधन सीमित मात्रा में होते हैं इसलिए विकास के साथ–साथ उत्सर्जित कचरे (घरेलू/औद्योगिक) की मात्रा दिनों–दिन पर्यावरण प्रदूषण को भयावत रूप प्रदान कर रही है। ज्ञान के अभाव में कचरा प्रबन्धन के हमारे तौर–तरीके पारम्परिक और अवैज्ञानिक हैं जिससे उत्सर्जित कचरे का पूरा निस्तारण नहीं हो पाता है जोकि एक चुनौती है। जबकि विकसित देशों में बेकार कचरे से अनेक उपयोगी उत्पाद बनाकर कचरे का प्रबन्धन का कार्य किया जा रहा है। जैसे– बिजली बनाना, विभिन्न प्रकार की उपयोगी गैस, खाद बनाना आदि। शाश्वत विकास (सतत विकास) के अंतर्गत हमें ऐसी नीति पर विचार प्रदान करना है कि व्यापक रूप से उत्सर्जित कचरे का प्रबन्धन कैसे, किस सीमा में और किस स्तर पर किया जा सके कि सभी लोगों के लिए लाभदायक तो बनी रहे और पर्यावरण का प्रदूषण भी कम हो सके।

8. रिसाइकिलिंग प्रबन्ध– वर्तमान समय में नित नये विकास के साधन हो गये हैं जिससे अद्यतन हमेशा बना रहता है जिससे पुरानी वस्तुओं को दुबारा उपयोग लेने लायक बनाने हेतु रिसाइकिलिंग तकनीक को बढ़ावा देना होगा। जैसे– कागज के उपयोग तो कम करें ही, जहां तक हो सके डिजिटल का उपयोग करें, साथ ही साथ कागज के दोबारा उपयोग में लेने लायक रिसाइकिलिंग प्रबन्धन की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। यहां शाश्वत विकास के अंतर्गत हमें ऐसी तकनीकी विकास पर जोर देता है जिसके माध्यम से किसी वस्तु का दोबारा या ज्यादा से ज्यादा उपयोग में ले सकें और जिसके माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण भी कम हो सके।

9. यूज एण्ड थ्रो की प्रवृत्ति से बचें– एक बार इस्तेमाल कर फेंकने वाली वस्तुओं की जगह जहां तक हो सके कम से कम उपयोग में लेवें। जैसे– बाजार से कोई वस्तु खरीदते हैं तो उस वस्तु को लेने के लिए भी प्लास्टिक की थैली में उसे लेकर आते है फिर बाद में उस प्लास्टिक की थैली को कचरे में फैंक देते है। इसकी जगह आप कपड़े की थैली का इस्तेमाल पर बल दे सकते हैं। ठीक उसी प्रकार टिशू पेपर की जगह छोटे कपड़े के तौलिये का उपयोग लिया जा सकता है जिसे दोबारा साफ कर उपयोग में लिया जा सकता है। यहां शाश्वत विकास हमें इस बात की ओर ध्यान केन्द्रित करता है कि यूज एण्ड थ्रो की प्रवृत्ति से पर्यावरण पर गहरा विपरीत प्रभाव पड़ता है। जहां तक हो सके इससे बचें ताकि पर्यावरण को कम से कम क्षति हो।

10. स्वस्थ जीवन शैली का विकास– वर्तमान समय में मानव विलासितापूर्ण जीवनशैली पर बल देता है जिससे ज्यादा से ज्यादा उपयोग या अधिक आवश्यकता पूर्ति की दौड़ में शामिल है जिससे प्राकृतिक संसाधनों का दुरूपयोग व्यापक रूप से हो रहा है। सतत विकास (शाश्वत विकास) में विलासितापूर्ण जीवन के स्थान पर नियोजित एवं संयोजित उपभोग पर बल देता है। यहां जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं जैसे– रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति किस सीमा तक कैसे भविष्य में भी होती रहे, ऐसी रणनीति पर बल देता है।

उपरोक्त बिन्दुओं के माध्यम से हमें स्पष्ट हो जाता है कि शाश्वत विकास की संकल्पना द्वारा पर्यावरण को कम से कम क्षति पहुंचाते हुए विकास की सीढ़ियां चढ़ा जा सकता है। इसके लिए नित नये अनुसंधान के मार्ग को अपनाना होगा जिससे पर्यावरण संरक्षण हो सके।

वर्तमान समय में आधुनिकता के नाम पर नये कल कारखाने, फैक्टरियों एवं औद्योगिक संस्थानों का अंधाधूंध स्थापित किये जाने से पर्यावरण काफी प्रभावित होता जा रहा है। आमजन का सहयोग पर्यावरण संरक्षण के लिए हमारी संस्कृति एक अभिन्न अंग के रूप में रहा है, परंतु मानव में अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की प्रवृत्ति ने पर्यावरण संकट की नई चुनौती को जन्म दिया है। कोविड–19 महामारी ने हमें साफ हवा (ऑक्सीजन) की कीमत समझा दी है। पर्यावरण संरक्षण के निमित्त आमजन का सहयोग अनिवार्य हो गया है। आज मानव को सकारात्मक सोच की मानसिकता विकसित करने की आवश्यकता है। दैनिक कार्यों में प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग किया जाए, ताकि पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके। घरों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों को अलग–अलग वर्गों में विभाजित किया जाना चाहिए। किसान जैविक खेती करें। कम से कम उर्वरक व कीटनाशकों का प्रयोग किया जाए। प्रत्येक व्यक्ति अपने आसपास गमलों में छोटे–छोटे पौधे लगाएं। कम बिजली, कम शोरगूल, कम पानी, कम गैस का प्रयोग कर कोई भी व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रदूषण रोकने के लिए जलाऊ लकड़ी का उपयोग कम करना जरूरी है, जिसके लिए विद्युत शवदाह गृहों का उपयोग करना चाहिए। पराली न जलाई जाये प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए कम दूरी तय करने के लिए साइकिल एवं अधिक दूरी तय करने के लिए सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करें। इस तरह व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से छोटे–छोटे प्रयास करके भी पर्यावरण को ठीक रखा जा सकता है जिससे मानव तथा पर्यावरण एक–दूसरे के पूरक बन सकें।

निष्कर्ष—पर्यावरण के उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण के अन्तर्गत विविध आयाम हैं। इसके अन्तर्गत वे सभी वस्तुएँ और दशाएँ सम्मिलित है जिनका हम अपने चारो ओर अनुभव करते है। इस जटिल समग्रता को समझने के लिए आवश्यक है कि हम पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ—साथ प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाये। इसमें सरकार की तरफ से प्रशासनिक के साथ—साथ इसको शिक्षा के निचले स्तर से उच्च स्तर तक पर्यावरण संरक्षण का व्यावहारिक पाठ्यक्रम में पर्यावरण नैतिकता को समाहित किया जाना चाहिए। जिससे के व्यक्ति के अंदर शाश्वत विकास (सतत विकास) की समझ हो सके। इससे पर्यावरण के प्रति ज्ञान, समझ, कौशल तथा जागरूकता द्वारा अपेक्षित अभिव्यक्ति विकसित हो सकेगी तब कह सकेंगे कि ''पर्यावरण सुरक्षित है तो हमारा कल सुरक्षित है।''

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

सन्दर्भ स्रोत सूची

1 बोहरा, वंदना ''पर्यावरण अध्ययन'', ओमेगा पब्लिकेषन, नई दिल्ली—02, 2014, पृ. 284
2 सिंह, अरूण कुमार, ''पर्यावरणीय अर्थशास्त्र : विविध आयाम'', रीगल पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली—27, पृ. 171
3 मेहता, ओम प्रकाश, भारतीय पर्यावरणीय आचरण शास्त्र : सनातन परम्परा का रचनात्मक सर्वेक्षण, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2015
4 पर्यावरण विमर्श ''इलेक्ट्रॉनिक वाहनों से बचायें पर्यावरण'' वर्ष—23, वोल्यूम—2, अप्रैल—जून, 2018, पृ. 24
5 रघुवंशी, अरूण एवं रघुवंशी, चन्द्रलेखा, पर्यावरण तथा प्रदूषण, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल—4, संस्करण 1990, पृ. 322
6 सिंह, भोपाल, पर्यावरण शिक्षा, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली, संस्करण 1999, पृ. 288
7 शर्मा, मंजू एवं चौहान, राकेष कुमार ''पर्यावरण षिक्षा'', षिक्षा प्रकाषन, जयपुर—03, 2007, पृ. 196
8 शर्मा, राकेश कुमार, पर्यावरण प्रशासन एवं मानव पारिस्थितिकी, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2012, पृ. 363
9 सक्सैना, के.के. अनिल गुप्ता, डॉ. चांदनी कृपलानी, पर्यावरणीय अध्ययन, यूनिवर्सिटी बुक हाउस (प्रा.) लि, जयपुर, 2013
10 शर्मा, बी.डी., पर्यावरण शिक्षा, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2014, पृ. 288
11 शर्मा, लोकेश, पर्यावरण शिक्षा (विज्ञान) एवं उसका शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा—2, 2014